अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं समकालीन भारत की परिस्थितियाँ

हितेश कुमार, शोध छात्र,
(इतिहास विभाग)
मेरठ कॉलिज, मेरठ
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ० चन्द्रशेखर भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर,
(इतिहास विभाग)
मेरठ कॉलिज, मेरठ
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध सार

परिस्थितियाँ एक प्रकार से व्यक्ति के जीवन पर बहुत ज्यादा प्रभाव डालती है। परिस्थितियों से ही जीवन की दिशा बदलती है, और व्यक्ति को आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती है, और परिस्थितियाँ ही व्यक्ति को आगे कुछ करने की प्रेरणा देती है।[1]

व्यक्ति का जन्म उसके वश की बात नहीं है। उसके पैदा होते ही जाति, वंश और धर्म उससे जुड़ जाते हैं। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का जन्म भी एक अस्पृश्य परिवार में हुआ जिसको उस समय शूद्र कहते थे।

बीज शब्द/मुख्य शब्द– डॉ० भीमराव अम्बेडकर, परिस्थितियाँ, भारतीय समाज, अछूत, जाति!

प्रस्तावना–

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का घराना महार जाति का था महार जाति हिन्दू समाज की अछूत मानी गई अनेक जातियों में से एक थी। अनेक दलित जातियों से मिलकर बना हुआ यह सम्पूर्ण समाज अस्पृश्य माना जाता था जिसको छूना भी जाना मना था। इस अछूत समाज की उस समय जनसंख्या छह करोड़ रही होगी। अर्थात् हिन्दू समाज का हर एक पाँचवा हिस्सा चाहे वह पुरूष हो या स्त्री या संतान, उसे अछूत माना जाता था।[2]

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ लोग उन्हें बहिष्कृत, अछूत या अतिशूद्र कहते थे, तो कुछ उन्हें अंत्यज, अवर्ण नाम से पुकारते थे। अस्पृश्यता की भंयकर रूढ़िवादिता से उनका जीवन शापित एवं कलंकित बन गया था। सवर्ण हिन्दू कुत्ता, बिल्ली, गाय आदि पालतू जानवरों को छूते थे परन्तु अस्पृश्य को छूना पाप मानते थे। अस्पृश्यों की परछाई तक अपवित्र लगती थी। अगर उनके कुछ शब्द हिन्दुओं को सुनाई पड़े, तो वे उन्हें मनहूस

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

लगते थे। सच यह था कि जाति भेद की ऊँच–नीच–दर्शक सीढ़ी के निचले कदमों पर अपमानित जीवन बिताने वाले नाई और धोबी भी महार–मांतगों को अपवित्र मानते थे।[3]

सवर्ण हिन्दुओं की निर्दयता और अछूत जाति में जन्म लेने की वजह से अनपढ़ तथा अज्ञ अछूत समाज का जीवन हेय बन गया था। अच्छी सरकारी नौकरियाँ, इज्जतमंद धंधे या पुलिस विभाग में उन्हें प्रवेश नहीं मिलता था। इसके विपरीत रास्ते झाड़ना, शौचालय साफ करना, जूते बनाना, मृतपशुओं की खाल उतारना, बाँस की चीजे बनाकर बेचना आदि काम उन्हें विवश होकर करने पडते थे। पेट पालने के लिए उन्हें यह काम करने पड़ते थे। उनमें से जो लोग, कुछ मात्रा में भाग्यशाली थे, उन्हें सवर्ण हिन्दुओं के खेत में बहुत कम वेतन पर रोजाना जी तोड़कर काम करना पड़ता था। ये लोग दास के रूप में खेत मे खपते थे, ये ही थे उनकी आजीविका के साधन। अनपढ़, निर्बल और निर्धन जैसी इस अनाथ जाति की दुर्दशा यही थी। उनकी जीवन–चर्या अनेक प्रकार के अलिखित किन्तु अनुल्लंधित और अनेक क्रूर बन्धनों से कसकर बाँधी गई थी, उनका रहन–सहन कैसा हो, वेशभूषा कैसी हो, उनका आहार–विहार कैसा हो, वे किन धातुओं के बर्तनों का इस्तेमाल करें, किन धातुओं के जेवर पहने–इन पर भी पाबन्दी थी।

अस्पृश्यो को गाँव के बाहर रोगदायी कूड़ेखाने पर उनकी नंग–धड़ंग झोपड़ियों में बड़ी मुश्किल से अपना जीवन–यापन करना पड़ता था। जैसे–तैसे घुटनों तक और लज्जा रक्षणार्थ आवश्यक फटे चीथड़ों से भी उनकी स्त्रियाँ वंचित थी। बच्चों के लिए तो सिर्फ पटकुरों का ही साज था। शरीर पर पटकुर, माथे पर एक–दो गेंडुरी का मुंडासा, हाथ मे लाठी, कंधे पर कम्बल और कमर में लँगोटी–ऐसा पुरूषों का पहनावा था। अछूतों की यह दिनचर्या अतीत भारत की मानों यादगार ही थी।[4]

धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक रोक के कारण यह समाज पूरी तरह से इन्सानियत से वंचित हुआ था। वह हिन्दू समाज का एक घटक होने पर भी कूड़ेखाने में अछूत के रूप में पैदा होता था, कूड़े खाने में ही धूल फाँकते जीवन–यापन करता था, दरिद्रता और भूखमरी में प्राण त्याग देता था।[5]

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का जब जन्म हुआ उस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। इस शासन के अन्तर्गत स्वशासन की कोई संस्थाएं न थी। भारत में इस समय लोकतंत्र आदिम अवस्था में था। इस समय देश में स्वशासन की संस्थाओं का नितान्त अभाव था।[6]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

भारत में राष्ट्रीयता की भावना का भली भांति विकास नहीं हुआ था। देश में राष्ट्रीय एकता की भावना का भी कोई स्पष्ट आधार नहीं था। उच्च वर्ग के पश्चिमी शिक्षा प्राप्त कुछ लोगों की राजनीतिक गतिविधियों से भारत के जनसाधारण को कुछ लेना–देना नहीं था। देश में कोई राजनीतिक चेतना व जागरूकता नहीं थी।

भारतीयों की देश के प्रशासन चलाने के कार्य में कोई भागीदारी व सुनवाई न थी। ग्राम पंचायतों जैसी स्वशासन की संस्थाएं अग्रेंज हुकूमत द्वारा नष्ट कर दी गई थी, तथा ब्रिटिश शासन व्यवस्था में जन–प्रतिनिधयों की सदस्यता वाली संस्थाओं की कोई सत्ता न थी। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को सदस्यता देने की कोई व्यवस्था न थी। इस प्रकार इस समय तक ब्रिटिश शासन व्यवस्था में जन–प्रतिनिधात्मक प्रणाली का नितान्त अभाव था।[7]

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का समय वह समय था, जब उपनिवेशवाद भारत में पूर्ण रूप से चल रहा था। पाश्चात्य विद्वानों ने यह प्रतिपादित करना शुरू कर दिया था कि गोरे लोग सब मनुष्यों में उत्कृष्ट हैं और एशिया तथा अफ्रीका के निवासियों को सभ्य बनाने का कार्य ईश्वर द्वारा उनके सुपुर्द किया गया है। अतः यह सर्वथा स्वाभाविक व उचित है कि पाश्चात्य देश एशिया तथा अफ्रीका पर शासन करे। पाश्चात्य विद्वानों के इस मन्तव्य का प्रभाव अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों पर पड़ने लगा था और उच्च अग्रेंजी शिक्षा प्राप्त भारतीय अंग्रेजों के इस विदेशी शासन को अपने देश के लिए न केवल स्वभाविक व समुचित मानने लगे अपितु यह भी समझने लगे थे कि यह शासन उनके लिए वस्तुतः हितकारी है।[8]

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के समय भारत का लगभग सम्पूर्ण–भाग सीधे अंग्रेजी शासन के अधीन था। भारत का राजकार्य ब्रिटिश सम्राट द्वारा नियुक्त गवर्नर जनरल एवं गवर्नरों द्वारा चलाया जाता था। उस समय भारतीय अंग्रेजी प्रभुओं के विरूद्ध उंगली तक न हिला सकते थे। भारतीयों में आपसी सहयोग व एकता का अभाव भी था। भारतीयों में जाति–पाँति ज्यादा थी व हिन्दु–मुस्लिमों में भी सहयोग की भावना नहीं थी। मराठे राजपूत–सिक्ख जाट आदि विविध राजकुलों के राजा हिन्दु धर्म के अनुयायी थे पर वे अपने को एक अनुभव नहीं करते थे। दिल्ली, अवध, बंगाल, हैदराबाद आदि के मुस्लिम बादशाह और नवाब मुसलमान होते हुए भी राजनीतिक क्षेत्र में एक दूसरे के सहयोगी नहीं थे।[9]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

भारतीय समाज अनेक जातियों और उपजातियों में बंटा हुआ था। इनमें से कई–ब्राह्मण और क्षत्रिय–उच्च वर्ग के होने का दावा करते थे और अन्य को शूद्र वर्ण अथवा उससे भी निम्न अछूत अथवा अंत्जय मानते थे। भारतीय समाज एक प्रकार से चार वर्णों में विभक्त था जो इस प्रकार से है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। व्यक्ति की जाति जन्म पर आधारित थी और एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति में सम्मिलित नहीं किया जाता था। ब्राह्मण वर्ण में पैदा व्यक्ति को समाज में सबसे उच्च स्थान प्राप्त था। क्षत्रिय वर्ण में पैदा व्यक्ति को समाज में दूसरा स्थान प्राप्त था। वैश्य वर्ण में पैदा व्यक्ति को समाज में तीसरा स्थान प्राप्त था व सबसे निचला स्थान शूद्रों को प्राप्त था।[10]

बचपन में डॉ० भीमराव अम्बेडकर को सतारा में रहते हुए अस्पृश्यता के प्रहारों को सहन करना पड़ा था। उनके सिर के बाल काटने के लिए कोई हज्जाम तैयार नहीं होता था। इसलिए उनकी बड़ी बहन ही उनकी हजामत बनाया करती थी। अकाल के दिनों में रामजी सूबेदार को गोरेगाँव के पास काम पर तैनात किया गया था। उनके बच्चे सतारा में रहते थे। एक बार डॉ० भीमराव अम्बेडकर अपने भाई और भांजो को साथ लेकर रेलगाड़ी से गोरेगांव पहुँचे। मगर स्टेशन से गाँव तक पहुँचने के लिए उन्हें और उनके साथियों को, अछूत होने के कारण कोई गाड़ीवान अपनी गाड़ी में ले जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। आखिर एक बैलगाड़ी वाला मान गया, मगर बैलगाड़ी भीम को हांकनी पड़ी। गाड़ीवान गाड़ी पर विराजमान अवश्य था लेकिन अस्पृश्य के लिए गाड़ी हांकना उसको अपनी आन के खिलाफ लग रहा था। किसी को भी इन बच्चों पर दया नहीं आयी, उन्हें डेढ़ दिन बिना पानी के गुजारा करना पड़ा, क्योंकि अछूत होने के कारण उन्हें किसी भी कुएं से पानी पीने को नहीं मिल सका। दूसरे दिन भीम और उनके साथी भूखे–प्यासे अधमरे से अपने गंतव्य तक पहुँचे।[11]

उन दिनों गाँव से शहर में आकर शिक्षा प्राप्त करना और मैट्रिक की परीक्षा पास करना आश्चर्य की बात थी। इसलिए भीमराव का मैट्रिक (हाईस्कूल) की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाना भारतीय अछूतों के इतिहास में मील का पत्थर बन गया था।

अस्पृश्य अर्थात् अछूत समाज ने भीमराव के यश को प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया। महाराष्ट्र के महान् समाजसुधारक सीताराम केशव बोले की अध्यक्षता में भीमराव को सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। केशव बोले महोदय् की अध्यक्षता में एक स्वागत

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

समारोह में महान सत्यशोधक गुरूवर कृष्णराव अर्जुन केलुसकर गुरूजी ने भीमराव की अध्यनशीलता व अल्पायु में प्राप्त महान उपलब्धि की प्रशंसा की तथा स्वरचित ''बुद्ध चरित्र'' नामक पुस्तक भीमराव को पुरस्कार के रूप में भेंट की। गुरूजी ने रामजीराव सकपाल से कहा कि भीमराव को उच्च शिक्षा देनी चाहिए, इसके लिए वे बड़ौदा महाराजा शायजीराव गायकवाड़ से सहायता दिलवा सकते हैं। इस पर रामजीराव सकपाल ने भी कहा कि उन्होंने भीमराव को उच्च शिक्षा दिलाने का निश्चय किया हुआ है, इसके लिए उन्हें चाहे जो भी आर्थिक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ें, वे अपने उद्देश्य से टस से मस नहीं होगें'। 'बुद्ध चरित्र' पाकर डॉ० भीमराव अम्बेडकर बहुत खुश हुए। यह प्रथम पुस्तक है जिसने भीमराव के मन पर गहरा प्रभाव ड़ाला तथा आगे यही पुस्तक उनके धर्मांतरण के क्रांतिकारी कदम की एक आधारशिला बनी।

उन दिनों की प्रचलित परम्परा के अनुसार भीमराव को मैट्रिक की परीक्षा पास करने के पूर्व ही विवाह बंधन में बंध जाना पड़ा। तब उनकी उम्र मात्र सत्रह वर्ष की थी। उनकी पत्नी की उम्र केवल नौ वर्ष की ही थी।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के जीवन में ऐसे कई प्रसंग आए जिनसे उन्हें अपमानित होना पड़ा तथा कुछ ऐसे भी प्रसंग आए जिनसे उन्हें उच्च जाति के लोगों से अच्छे व्यवहार की अनुभूति प्राप्त हुई। डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने अपने संस्मरण में कहा है :–

''मेरा स्वभाव बचपन से ही जिद्दी हैं। अब ऐसा है या नहीं यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता किन्तु लोग अवश्य कहते होंगे कि मेरा स्वभाव अभी भी जिद्दी है। यह प्रसंग मेरे बाल्यकाल का हैं तब मैं अग्रेंजी की दूसरी कक्षा में पढ़ता था। हमारी पाठशाला सतारा के सैनिक कैंप में थी। तब हमें 'पेडसे नामक एक शिक्षक पढ़ाते थे। वे मुझ पर बहुत मेहरबान थे। वे मुझे बहुत चाहते थे। मेरे जिद्दी स्वभाव से सभी लोग परिचित थे। यदि मुझे किसी काम को करने से रोका जाता था तो मैं जानबूझकर उसी काम को किया करता था।

एक बार जोरदार वर्षा हुई। स्कूल जाने का समय हो चुका था। मेरे मित्रों ने कहा– 'देखो, भीमा, पानी जोरों से बरस रहा है, तू पानी में स्कूल मत जा, नहीं तो भीग जाएगा।'' मैने उनकी बात नही मानी। मेरा बड़ा भाई छाता लेकर आया, मैंने कहा– 'छाता लेकर तुम स्कूल जाओं, मैं अकेला ही भीगते हुए स्कूल जाऊंगा।'

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

मेरे भाई ने मुझे समझाया लेकिन मैंने उनकी एक नही मानी। भीगते हुए मैं स्कूल जा पहुंचा शिक्षक ने मेरी हालत देखी और पूछा 'बिना छाता लिए, तुम स्कूल क्यों आए हो?' मैने उत्तर दिया, ''छाता एक ही है, हम दो भाई एक छाते में नही आ सकते थे, इसलिए मैं भीग गया।''

शिक्षक ने अपने पुत्र के साथ मुझे अपने घर भेजा। नहाने के लिए गर्म पानी मिल गया। पहनने के लिए लंगोटी मिल गई। लंगोटी पहन कर जब मैं स्कूल पहुंचा तो सभी बच्चे मुझे देख कर हँसने लगे। मैं बहुत लज्जित हुआ। मैं रोने लगा। तब से मैने अपने स्वभाव में परिवर्तन कर लिया। अनावश्यक जिद करनी छोड़ दी। इस निर्णय से मैं कितना सफल हुआ हूँ, ये लोगों को मुझे भी बताना चाहिए।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर को पुत्रवत प्रेम देने वाले एक और ब्राह्मण शिक्षक थे। उनका उपनाम आंबेडकर था। डॉ० भीमराव अम्बेडकर का उपनाम 'आम्बावड़ेकर' था क्योंकि वे 'आबड़ेव' गांव के निवासी थे। वह दोपाली से पांच मील की दूरी पर था। उन्हें आंबेडकर गुरूजी प्रतिदिन दोपहर की छुट्टी में सब्जी–रोटी खाने के लिए दिया करते थे। उन्होने कहा– 'भीमराव, तुम्हारा 'आम्बावडेकर' उपनाम बोलने में अटपटा–सा लगता हैं। यदि मैं तुम्हारा उपनाम 'आम्बावडेकर' के स्थान पर 'आम्बेड़कर' रख दूं तो कोई आपत्ति तो नही होगी। भीमराव ने इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की और हाईस्कूल रजिस्टर में भीमराव का उपनाम परिवर्तित हुआ। 'आंबेडकर उपनाम से ही डॉ0 भीमराव आम्बेड़कर ने इतिहास रच डाला। साथ ही आम्बेडकर गुरू जी का नाम भी अमर हो गया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 2, (April-June 2022

सन्दर्भ

1. मून, वसंत : (अनुवादक): पांडे प्रशांत : डॉ० बाबासाहब आंबेडकर, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, वसंत कुंज, नई दिल्ली, आठवी आवृत्ति, 2017
2. कीर धंनजय : (अनुवाद): सुर्वे गजानन : डॉ0 बाबासाहब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2018
3. अम्बेडकर महेश : डॉ० भीमराव अम्बेडकर, डायमंड, बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, संस्करण–2017
4. शहारे, मा0ला0 : डॉ0 अनिल नलिनी : डॉ0 बाबासाहेब डॉ0 आबेडकर की संघर्षयात्रा एवं संदेश, सम्यक प्रकाशन, 32/3, क्लब रोड, पश्चिमी पुरी, नई दिल्ली–63, पंचम संस्करण–2014
5. खैरमोडे, चां0भ0 : डॉ0 भीमराव रामजी आंबेडकर, खण्ड–2, बौद्धजन पंचायत समिति नाना बिल्डिंग, पहला मणला, परेल, मुबंई न012, 1958
6. बाली एल0आर0 : डॉ0 अम्बेडकर–कलम का कमाल, सम्पूर्ण वाड्मय का सार–भाग एक, भीम पत्रिका पब्लिकेशन, जांलघर (पंजाब), दूसरा संस्करण–2014
7. बाबा साहब आंबेडकर रायटिंग्ज एंड स्पीचेस खंड–1 1979
8. मकवाणा किशोर : डॉ0 आंबेडकर जीवन दर्शन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2019
9. गुप्ता शुभम : जीवनी डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, प्रभाकर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2021
10. ओमवेट गेल : (अनुवाद) डॉ0 पूरनचंद टंडन : आंबेडकर प्रबुद्ध भारत की ओर, पेगुंइन जीवनी, पेंगुइन बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाऊस, इंडिया, प्रा0लि0 गुड़गांव, हरियाणा भारत
11. महर्षि डॉ० संतोष कुमार : डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का जीवन दर्शन, अवन्तिका बुक, दिल्ली, संस्करण–2014